Teacher's Name - C. Patel
Class - 9th
Section - Tulip
Subject - Hindi

S. N.	Date	Lesson No. & Name	Classwork	Homework
1	2.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	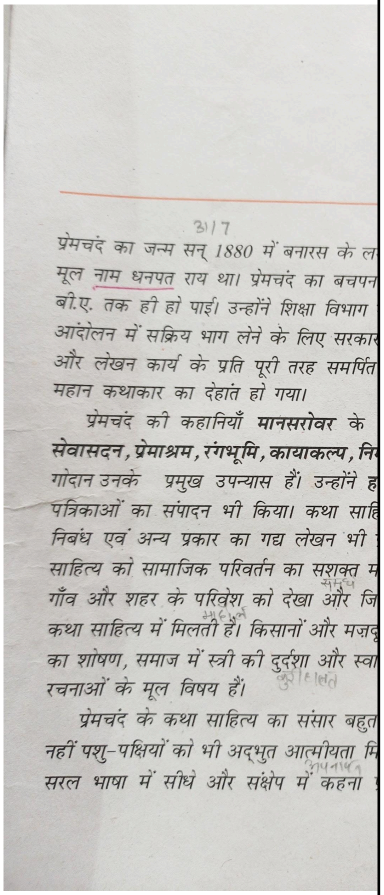 प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 में बनारस के ल मूल नाम धनपत राय था। प्रेमचंद का बचपन बी.ए. तक ही हो पाई। उन्होंने शिक्षा विभाग आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए सरकार और लेखन कार्य के प्रति पूरी तरह समर्पित महान कथाकार का देहांत हो गया। प्रेमचंद की कहानियाँ **मानसरोवर** के **सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, नि** गोदान उनके प्रमुख उपन्यास हैं। उन्होंने ह पत्रिकाओं का संपादन भी किया। कथा साहि निबंध एवं अन्य प्रकार का गद्य लेखन भी साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त म गाँव और शहर के परिवेश को देखा और जि कथा साहित्य में मिलती हैं। किसानों और मज़दू का शोषण, समाज में स्त्री की दुर्दशा और स्वा रचनाओं के मूल विषय हैं। प्रेमचंद के कथा साहित्य का संसार बहुत नहीं पशु-पक्षियों को भी अद्भुत आत्मीयता मि सरल भाषा में सीधे और संक्षेप में कहना	1. प्रेमचंद का जीवन परिचय याद करें। 2. जानवरों में सबसे बुद्धिहीन किसे समझा जाता है?

<table>
<tr><td></td><td></td><td></td><td>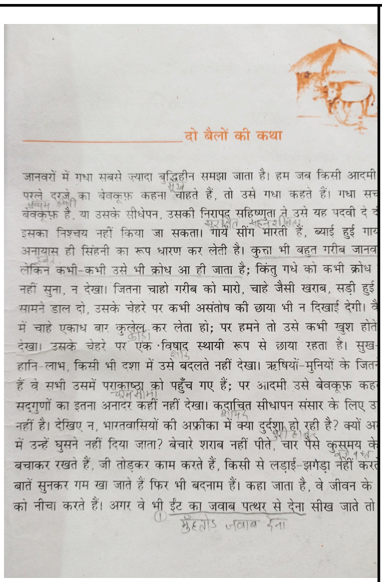
दो बैलों की कथा
जानवरों में गधा सबसे ज़्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी
परले दरजे का बेवकूफ़ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सच
बेवकूफ़ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी
इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याई हुई गाय
अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानव
लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है; किंतु गधे को कभी क्रोध
नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई
सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी। वै
में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो; पर हमने तो उसे कभी खुश होते
देखा। उसके चेहरे पर एक विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-
हानि-लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जित
हैं वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं; पर आदमी उसे बेवकूफ़ कह
सद्‌गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा। कदाचित सीधापन संसार के लिए उ
नहीं है। देखिए न, भारतवासियों की अफ्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है? क्यों अ
में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता? बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के
बचाकर रखते हैं, जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते
बातें सुनकर गम खा जाते हैं फिर भी बदनाम हैं। कहा जाता है, वे जीवन के
को नीचा करते हैं। अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते तो</td><td></td></tr>
<tr><td>2</td><td>3.4.25</td><td>पाठ 1 दो बैलों की कथा</td><td>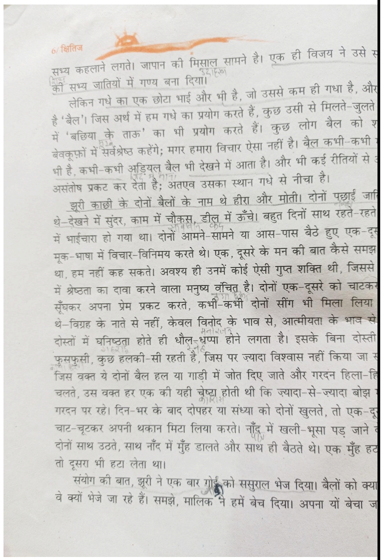
6/ क्षितिज
सभ्य कहलाने लगते। जापान की मिसाल सामने है। एक ही विजय ने उसे स
की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।
लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है, और
है 'बैल'। जिस अर्थ में हम गधे का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते
में 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को श
बेवकूफ़ों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे; मगर हमारा विचार ऐसा नहीं है। बैल कभी-कभी
भी है, कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है। और भी कई रीतियों से
असंतोष प्रकट कर देता है; अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।
झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती। दोनों पछाईं जा
थे—देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते-रहते
में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दू
मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे। एक, दूसरे के मन की बात कैसे समझ
था, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे
में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटक
सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया
थे—विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से
दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती
फुसफुसी, कुछ हलकी-सी रहती है, जिस पर ज़्यादा विश्वास नहीं किया जा स
जिस वक्त ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिए जाते और गरदन हिला-हि
चलते, उस वक्त हर एक की यही चेष्टा होती थी कि ज़्यादा-से-ज़्यादा बोझ
गरदन पर रहे। दिन-भर के बाद दोपहर या संध्या को दोनों खुलते, तो एक-दू
चाट-चूटकर अपनी थकान मिटा लिया करते। नाँद में खली-भूसा पड़ जाने
दोनों साथ उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। एक मुँह हट
तो दूसरा भी हटा लेता था।
संयोग की बात, झूरी ने एक बार गोईं को ससुराल भेज दिया। बैलों को क्या
वे क्यों भेजे जा रहे हैं। समझे, मालिक ने हमें बेच दिया। अपना यों बेचा ज</td><td>1.गधे को बुद्धि हैं क्यों माना जाता है?
2. गधे तथा ऋषि मुनियों में क्या समानता देखी गई है?</td></tr>
</table>

<table>
<tr>
<td>3</td>
<td>4.3.25</td>
<td>पाठ 1 दो बैलों की कथा</td>
<td>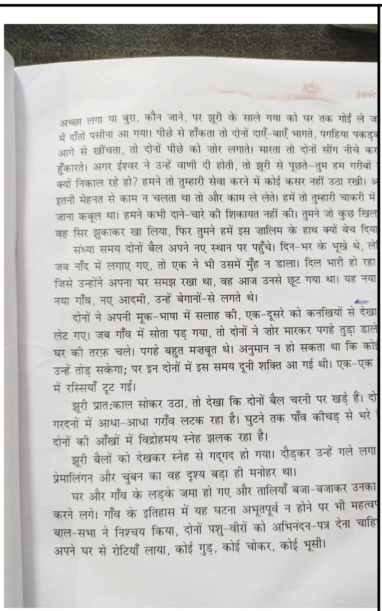
प्रेमचंद
अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले ज
में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते, पगहिया पकड़
आगे से खींचता, तो दोनों पीछे को ज़ोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे कर
हुँकारते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते–तुम हम गरीबों
क्यों निकाल रहे हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अ
इतनी मेहनत से काम न चलता था तो और काम ले लेते। हमें तो तुम्हारी चाकरी में
जाना कबूल था। हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की। तुमने जो कुछ खिल
वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस ज़ालिम के हाथ क्यों बेच दिया
संध्या समय दोनों बैल अपने नए स्थान पर पहुँचे। दिन-भर के भूखे थे, ले
जब नाँद में लगाए गए, तो एक ने भी उसमें मुँह न डाला। दिल भारी हो रहा
जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया था। यह नया
नया गाँव, नए आदमी, उन्हें बेगानों-से लगते थे।
दोनों ने अपनी मूक-भाषा में सलाह की, एक-दूसरे को कनखियों से देखा
लेट गए। जब गाँव में सोता पड़ गया, तो दोनों ने ज़ोर मारकर पगहे तुड़ा डाले
घर की तरफ़ चले। पगहे बहुत मज़बूत थे। अनुमान न हो सकता था कि कोई
उन्हें तोड़ सकेगा; पर इन दोनों में इस समय दूनी शक्ति आ गई थी। एक-एक
में रस्सियाँ टूट गईं।
झूरी प्रातःकाल सोकर उठा, तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दो
गरदनों में आधा-आधा गराँव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे
दोनों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है।
झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्गद हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा
प्रेमालिंगन और चुंबन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था।
घर और गाँव के लड़के जमा हो गए और तालियाँ बजा-बजाकर उनका
करने लगे। गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्व
बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनों पशु-वीरों को अभिनंदन-पत्र देना चाहि
अपने घर से रोटियाँ लाया, कोई गुड़, कोई चोकर, कोई भूसी।

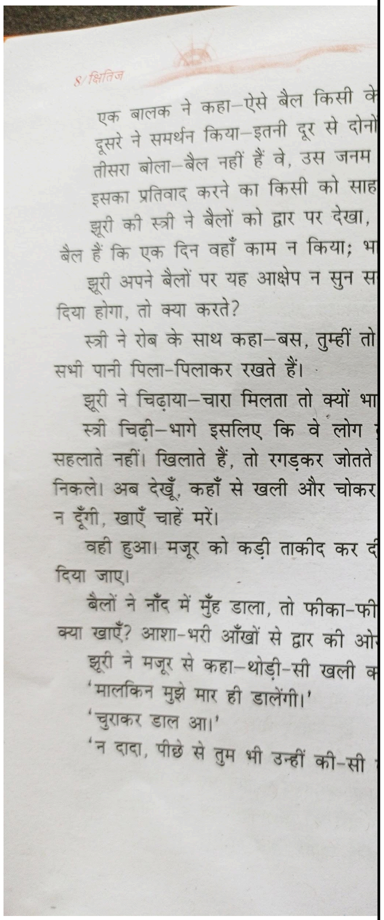
8/ क्षितिज
एक बालक ने कहा–ऐसे बैल किसी के
दूसरे ने समर्थन किया–इतनी दूर से दोनों
तीसरा बोला–बैल नहीं हैं वे, उस जनम
इसका प्रतिवाद करने का किसी को साह
झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा,
बैल हैं कि एक दिन वहाँ काम न किया; भ
झूरी अपने बैलों पर यह आक्षेप न सुन स
दिया होगा, तो क्या करते?
स्त्री ने रोब के साथ कहा–बस, तुम्हीं तो
सभी पानी पिला-पिलाकर रखते हैं।
झूरी ने चिढ़ाया–चारा मिलता तो क्यों भा
स्त्री चिढ़ी–भागे इसलिए कि वे लोग
सहलाते नहीं। खिलाते हैं, तो रगड़कर जोतते
निकले। अब देखूँ, कहाँ से खली और चोकर
न दूँगी, खाएँ चाहें मरें।
वही हुआ। मजूर को कड़ी ताकीद कर दी
दिया जाए।
बैलों ने नाँद में मुँह डाला, तो फीका-फी
क्या खाएँ? आशा-भरी आँखों से द्वार की ओर
झूरी ने मजूर से कहा–थोड़ी-सी खली क
'मालकिन मुझे मार ही डालेंगी।'<br>'चुराकर डाल आ।'<br>'न दादा, पीछे से तुम भी उन्हीं की-सी</td>
<td>1.भारतवासियों को अमेरिका में क्यों घुसने नहीं दिया जाता है?
2.बैल को गधा का छोटा भाई क्यों माना जाता है?</td>
</tr>
</table>

4	5.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	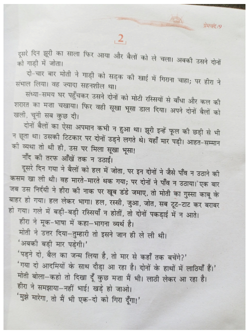 प्रेमचंद/9 2 दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और बैलों को ले चला। अबकी उसने दोनों को गाड़ी में जोता। दो-चार बार मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा; पर हीरा ने संभाल लिया। वह ज़्यादा सहनशील था। संध्या-समय घर पहुँचकर उसने दोनों को मोटी रस्सियों से बाँधा और कल की शरारत का मज़ा चखाया। फिर वही सूखा भूसा डाल दिया। अपने दोनों बैलों को खली, चूनी सब कुछ दी। दोनों बैलों का ऐसा अपमान कभी न हुआ था। झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ मार पड़ी। आहत-सम्मान की व्यथा तो थी ही, उस पर मिला सूखा भूसा! नाँद की तरफ़ आँखें तक न उठाईं। दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते-मारते थक गया; पर दोनों ने पाँव न उठाया। एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाए, तो मोती का गुस्सा काबू के बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल, रस्सी, जुआ, जोत, सब टूट-टाट कर बराबर हो गया। गले में बड़ी-बड़ी रस्सियाँ न होतीं, तो दोनों पकड़ाई में न आते। हीरा ने मूक-भाषा में कहा—भागना व्यर्थ है। मोती ने उत्तर दिया—तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी। 'अबकी बड़ी मार पड़ेगी।' 'पड़ने दो, बैल का जन्म लिया है, तो मार से कहाँ तक बचेंगे?' 'गया दो आदमियों के साथ दौड़ा आ रहा है। दोनों के हाथों में लाठियाँ हैं।' मोती बोला—कहो तो दिखा दूँ कुछ मज़ा मैं भी। लाठी लेकर आ रहा है। हीरा ने समझाया—नहीं भाई! खड़े हो जाओ। 'मुझे मारेगा, तो मैं भी एक-दो को गिरा दूँगा!' 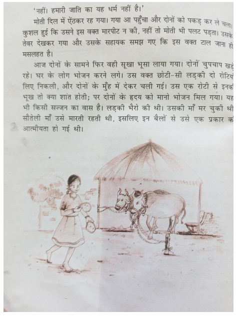 'नहीं। हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।' मोती दिल में ऐंठकर रह गया। गया आ पहुँचा और दोनों को पकड़ कर ले चला। कुशल हुई कि उसने इस वक्त मारपीट न की, नहीं तो मोती भी पलट पड़ता। उसके तेवर देखकर गया और उसके सहायक समझ गए कि इस वक्त टाल जाना ही मसलहत है। आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया। दोनों चुपचाप खड़े रहे। घर के लोग भोजन करने लगे। उस वक्त छोटी-सी लड़की दो रोटियाँ लिए निकली, और दोनों के मुँह में देकर चली गई। उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शांत होती; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया। यह भी किसी सज्जन का वास है। लड़की भैरो की थी। उसकी माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ उसे मारती रहती थी, इसलिए इन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी। 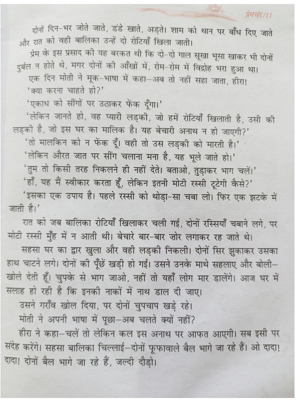 प्रेमचंद/11 दोनों दिन-भर जोते जाते, डंडे खाते, अड़ते। शाम को थान पर बाँध दिए जाते और रात को वही बालिका उन्हें दो रोटियाँ खिला जाती। प्रेम के इस प्रसाद की यह बरकत थी कि दो-दो गाल सूखा भूसा खाकर भी दोनों दुर्बल न होते थे, मगर दोनों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था। एक दिन मोती ने मूक-भाषा में कहा—अब तो नहीं सहा जाता, हीरा! 'क्या करना चाहते हो?' 'एकाध को सींगों पर उठाकर फेंक दूँगा।' 'लेकिन जानते हो, वह प्यारी लड़की, जो हमें रोटियाँ खिलाती है, उसी की लड़की है, जो इस घर का मालिक है। यह बेचारी अनाथ न हो जाएगी?' 'तो मालकिन को न फेंक दूँ। वही तो उस लड़की को मारती है।' 'लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।' 'तुम तो किसी तरह निकलने ही नहीं देते। बताओ, तुड़ाकर भाग चलें।' 'हाँ, यह मैं स्वीकार करता हूँ, लेकिन इतनी मोटी रस्सी टूटेगी कैसे?' 'इसका एक उपाय है। पहले रस्सी को थोड़ा-सा चबा लो। फिर एक झटके में जाती है।' रात को जब बालिका रोटियाँ खिलाकर चली गई, दोनों रस्सियाँ चबाने लगे, पर मोटी रस्सी मुँह में न आती थी। बेचारे बार-बार ज़ोर लगाकर रह जाते थे। सहसा घर का द्वार खुला और वही लड़की निकली। दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूँछें खड़ी हो गईं। उसने उनके माथे सहलाए और बोली—खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ, नहीं तो यहाँ लोग मार डालेंगे। आज घर में सलाह हो रही है कि इनकी नाकों में नाथ डाल दी जाए। उसने गराँव खोल दिया, पर दोनों चुपचाप खड़े रहे। मोती ने अपनी भाषा में पूछा—अब चलते क्यों नहीं? हीरा ने कहा—चलें तो लेकिन कल इस अनाथ पर आफत आएगी। सब इसी पर संदेह करेंगे। सहसा बालिका चिल्लाई—दोनों फूफावाले बैल भागे जा रहे हैं। ओ दादा! दादा! दोनों बैल भागे जा रहे हैं, जल्दी दौड़ो।	1. हीरा और मोती के प्रेम प्रकट करने के तरीके पर प्रकाश डालिए। 2. यदि ईश्वर ने बैलों को वाणी दी होती तो वे झूरी से क्या पूछते?
5	7.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	Art & craft class	1. हीरा और मोती के प्रेम प्रकट करने के तरीके पर प्रकाश डालिए। 2. यदि ईश्वर ने बैलों को वाणी दी होती तो वे झूरी से क्या पूछते?

6	8.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	(see images below)	1.बैलों को ले जाते समय गया को किस प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ा? 2. बैलों का नाँद में मुँह न डालने का कारण बताइए।

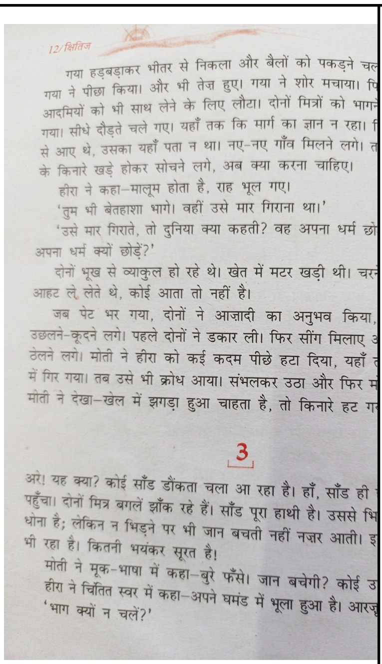

गया हड़बड़ाकर भीतर से निकला और बैलों को पकड़ने चल
गया ने पीछा किया। और भी तेज़ हुए। गया ने शोर मचाया। फि
आदमियों को भी साथ लेने के लिए लौटा। दोनों मित्रों को भागने
गया। सीधे दौड़ते चले गए। यहाँ तक कि मार्ग का ज्ञान न रहा। जि
से आए थे, उसका यहाँ पता न था। नए-नए गाँव मिलने लगे। त
के किनारे खड़े होकर सोचने लगे, अब क्या करना चाहिए।

हीरा ने कहा–मालूम होता है, राह भूल गए।

'तुम भी बेतहाशा भागे। वहीं उसे मार गिराना था।'

'उसे मार गिराते, तो दुनिया क्या कहती? वह अपना धर्म छो
अपना धर्म क्यों छोड़ें?'

दोनों भूख से व्याकुल हो रहे थे। खेत में मटर खड़ी थी। चरन
आहट ले लेते थे, कोई आता तो नहीं है।

जब पेट भर गया, दोनों ने आज़ादी का अनुभव किया,
उछलने-कूदने लगे। पहले दोनों ने डकार ली। फिर सींग मिलाए अ
ठेलने लगे। मोती ने हीरा को कई कदम पीछे हटा दिया, यहाँ त
में गिर गया। तब उसे भी क्रोध आया। संभलकर उठा और फिर म
मोती ने देखा–खेल में झगड़ा हुआ चाहता है, तो किनारे हट ग

3

अरे! यह क्या? कोई साँड डौंकता चला आ रहा है। हाँ, साँड ही
पहुँचा। दोनों मित्र बगलें झाँक रहे हैं। साँड पूरा हाथी है। उससे भि
धोना है; लेकिन न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नज़र आती। इ
भी रहा है। कितनी भयंकर सूरत है!

मोती ने मूक-भाषा में कहा–बुरे फँसे। जान बचेगी? कोई उ

हीरा ने चिंतित स्वर में कहा–अपने घमंड में भूला हुआ है। आरज़ू

'भाग क्यों न चलें?'

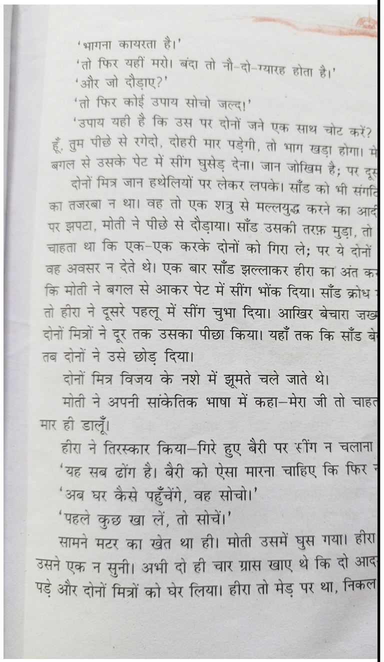

'भागना कायरता है।'

'तो फिर यहीं मरो। बंदा तो नौ-दो-ग्यारह होता है।'

'और जो दौड़ाए?'

'तो फिर कोई उपाय सोचो जल्द!'

'उपाय यही है कि उस पर दोनों जने एक साथ चोट करें?
हूँ, तुम पीछे से रगेदो, दोहरी मार पड़ेगी, तो भाग खड़ा होगा। मे
बगल से उसके पेट में सींग घुसेड़ देना। जान जोखिम है; पर दूस

दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके। साँड को भी संगठि
का तजरबा न था। वह तो एक शत्रु से मल्लयुद्ध करने का आदि
पर झपटा, मोती ने पीछे से दौड़ाया। साँड उसकी तरफ़ मुड़ा, तो
चाहता था कि एक-एक करके दोनों को गिरा ले; पर ये दोनों
वह अवसर न देते थे। एक बार साँड झल्लाकर हीरा का अंत क
कि मोती ने बगल से आकर पेट में सींग भोंक दिया। साँड क्रोध
तो हीरा ने दूसरे पहलू में सींग चुभा दिया। आखिर बेचारा ज़ख
दोनों मित्रों ने दूर तक उसका पीछा किया। यहाँ तक कि साँड बे
तब दोनों ने उसे छोड़ दिया।

दोनों मित्र विजय के नशे में झूमते चले जाते थे।

मोती ने अपनी सांकेतिक भाषा में कहा–मेरा जी तो चाहत
मार ही डालूँ।

हीरा ने तिरस्कार किया–गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना

'यह सब ढोंग है। बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर

'अब घर कैसे पहुँचेंगे, वह सोचो।'

'पहले कुछ खा लें, तो सोचें।'

सामने मटर का खेत था ही। मोती उसमें घुस गया। हीरा
उसने एक न सुनी। अभी दो ही चार ग्रास खाए थे कि दो आद
पड़े और दोनों मित्रों को घेर लिया। हीरा तो मेड़ पर था, निकल

7	9.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	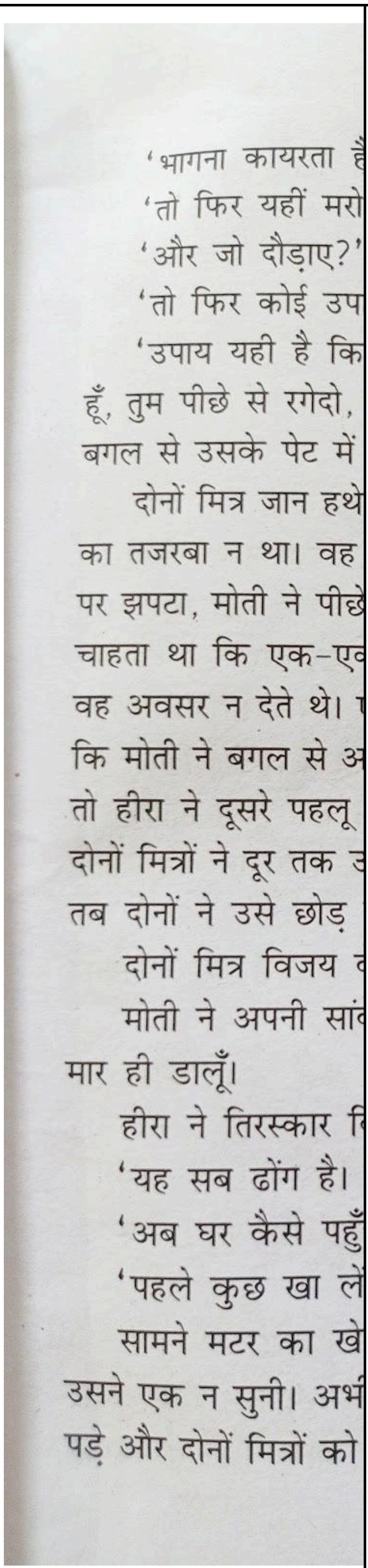 ‘भागना कायरता है ‘तो फिर यहीं मरो ‘और जो दौड़ाए?’ ‘तो फिर कोई उप ‘उपाय यही है कि हूँ, तुम पीछे से रगेदो, बगल से उसके पेट में दोनों मित्र जान हथे का तजरबा न था। वह पर झपटा, मोती ने पीछे चाहता था कि एक-एव वह अवसर न देते थे। कि मोती ने बगल से अ तो हीरा ने दूसरे पहलू दोनों मित्रों ने दूर तक उ तब दोनों ने उसे छोड़ दोनों मित्र विजय मोती ने अपनी सां मार ही डालूँ। हीरा ने तिरस्कार ‘यह सब ढोंग है। ‘अब घर कैसे पहुँ ‘पहले कुछ खा लें सामने मटर का खे उसने एक न सुनी। अभी पड़े और दोनों मित्रों को	1.छोटी लड़की का बालों से अपनापन होने का कारण बताइए। 2. पकड़े जाने पर भी गया बालों को पीट न सका, क्यों?

			14/क्षितिज खेत में था। उसके खु देखा, संगी संकट में है पकड़ लिया। प्रात:काल दोनों मि दोनों मित्रों को जीवन म खाने को एक तिनका इससे तो गया फिर भी गधे; पर किसी के साम तो इतने कमज़ोर हो गए की ओर टकटकी लगाए दोनों ने दीवार की नम रात को भी जब कु दहक उठी। मोती से बो मोती ने सिर लटक रहे हैं। 'इतनी जल्द हिम्मत चाहिए।' 'आओ दीवार तोड़ 'मुझसे तो अब कु 'बस इसी बूते पर 'सारी अकड़ निकल बाड़े की दीवार क में गड़ा दिए और ज़ोर म	

8	11.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	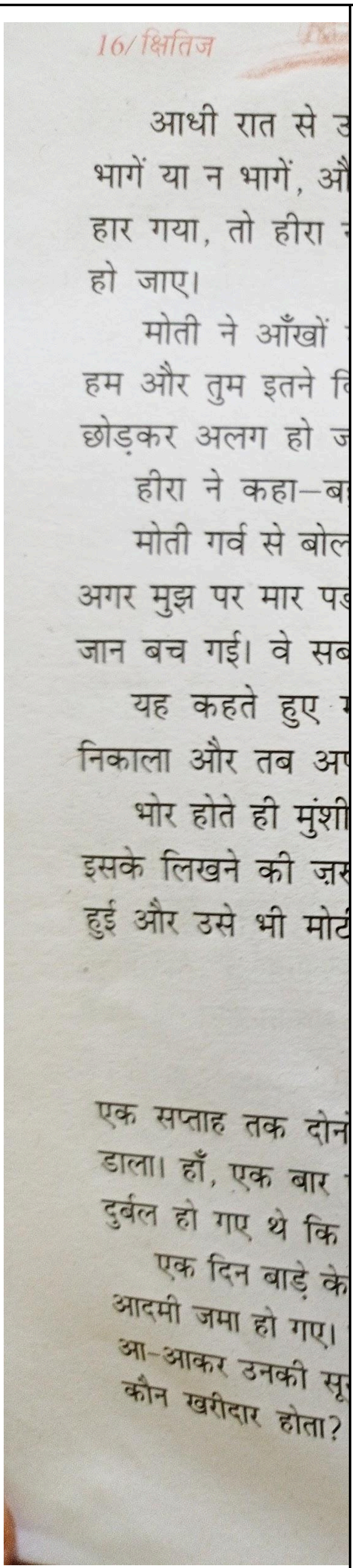 16/क्षितिज आधी रात से उ भागें या न भागें, औ हार गया, तो हीरा हो जाए। मोती ने आँखों हम और तुम इतने वि छोड़कर अलग हो ज हीरा ने कहा—ब मोती गर्व से बोल अगर मुझ पर मार प जान बच गई। वे सब यह कहते हुए निकाला और तब अ भोर होते ही मुंशी इसके लिखने की ज़र हुई और उसे भी मोटी एक सप्ताह तक दोन डाला। हाँ, एक बार दुर्बल हो गए थे कि एक दिन बाड़े के आदमी जमा हो गए। आ-आकर उनकी सू कौन खरीदार होता?	1. हीरा और मोती ने किस लिए जान की परवाह नहीं की? 2. कांजीहौस में बैलों की अवस्था का चित्रण कीजिए।

सहसा एक
आया और दोनों
उसका चेहरा देख
क्यों टटोल रहा है
नेत्रों से देखा औ
हीरा ने कहा
मोती ने अश्रु
हैं। उन्हें हमारे ऊ
'भगवान के
दिन उसके पास
था। क्या अब न
'यह आदमी
'तो क्या चिंत
जाएँगे।'
नीलाम हो जा
बोटी-बोटी काँप र
गिरते-पड़ते भागे ज
जमा देता था।
राह में गाय-बैल
प्रसन्न थे, चिकने,
कितना सुखी जीवन
उनके दो भाई बधिक
सहसा दोनों को
उन्हें ले गया था। वही
होने लगी। सारी थका
गया। इसी कुएँ पर ह

9	12.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	Dance class	1. हीरा और मोती ने किस लिए जान की परवाह नहीं की? 2. कांजीहौस में बैलों की अवस्था का चित्रण कीजिए।

10	15.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	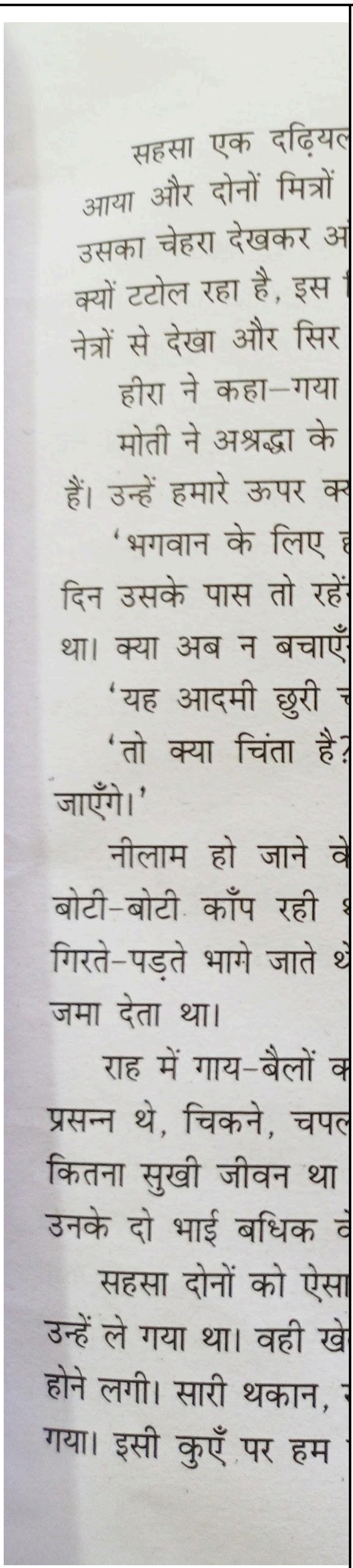 सहसा एक दढ़ियल आया और दोनों मित्रों उसका चेहरा देखकर अं क्यों टटोल रहा है, इस नेत्रों से देखा और सिर हीरा ने कहा–गया मोती ने अश्रद्धा के हैं। उन्हें हमारे ऊपर क् 'भगवान के लिए ह दिन उसके पास तो रहें था। क्या अब न बचाएँ 'यह आदमी छुरी च 'तो क्या चिंता है? जाएँगे।' नीलाम हो जाने के बोटी-बोटी काँप रही गिरते-पड़ते भागे जाते थे जमा देता था। राह में गाय-बैलों क प्रसन्न थे, चिकने, चपल कितना सुखी जीवन था उनके दो भाई बधिक के सहसा दोनों को ऐसा उन्हें ले गया था। वही खे होने लगी। सारी थकान, गया। इसी कुएँ पर हम	1.दोनों बैलों के दढियल के साथ जाने की स्थिति का वर्णन कीजिए। 2.बैलों को किनका जीवन अधिक सुखमय लगा?

			 मोती ने कहा- हीरा बोला-भ 'मैं तो अब घ 'यह जाने देग 'इसे मैं मार 'नहीं-नहीं, दौ दोनों उन्मत्त ह हमारा थान है। दो पीछे-पीछे दौड़ा च झूरी द्वार पर बै से गले लगाने लग हाथ चाट रहा था दढ़ियल ने ज झूरी ने कहा- 'तुम्हारे बैल 'मैं तो समझा बेचूँगा तो बिकेंगे। 'जाकर थाने 'मेरे बैल हैं। दढ़ियल झल्ल मोती ने सींग चला पीछे दौड़ा। गाँव क रहा था, दढ़ियल रहा था। और मोत यह तमाशा देखते	

			जब दढ़ियल हा हीरा ने कहा—मै 'अगर वह मुझे 'अब न आएगा। 'आएगा तो दूर ह 'जो गोली मरवा 'मर जाऊँगा, पर 'हमारी जान को 'इसीलिए कि हम ज़रा देर में नाँदों म खाने लगे। झूरी खड़ा सारे गाँव में उछाह-सा उसी समय मालकि 1. कांजीहौस में कैद पशु 2. छोटी बच्ची को बैलों 3. कहानी में बैलों के माध 4. प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग 5. किन घटनाओं से पता 6. 'लेकिन औरत जात पर से स्त्री के प्रति प्रेमचंद	

11	16.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	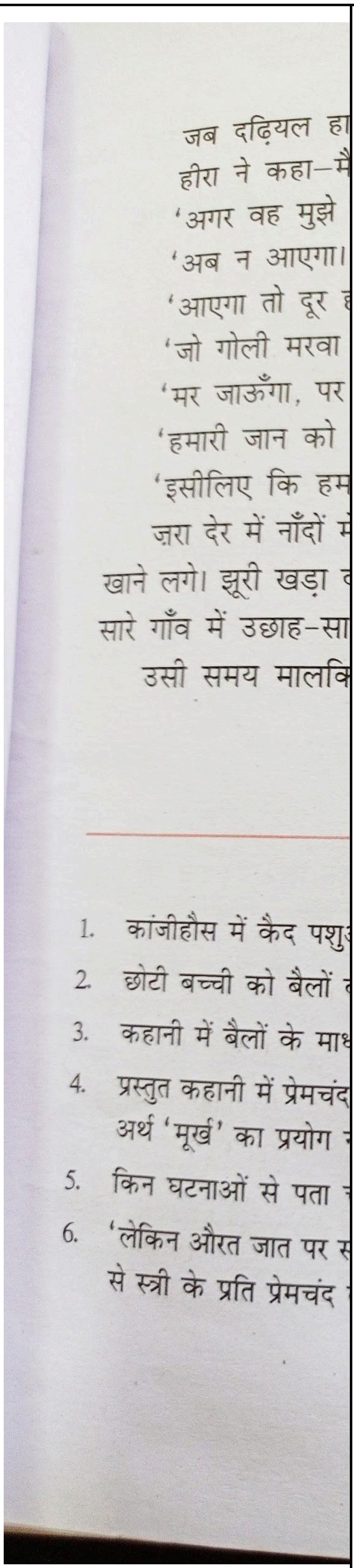 जब दढ़ियल हा हीरा ने कहा—मै 'अगर वह मुझे 'अब न आएगा। 'आएगा तो दूर ह 'जो गोली मरवा 'मर जाऊँगा, पर 'हमारी जान को 'इसीलिए कि हम ज़रा देर में नाँदों मे खाने लगे। झूरी खड़ा सारे गाँव में उछाह-सा उसी समय मालकि 1. कांजीहौस में कैद पशु 2. छोटी बच्ची को बैलों 3. कहानी में बैलों के माध 4. प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग 5. किन घटनाओं से पता 6. 'लेकिन औरत जात पर से स्त्री के प्रति प्रेमचंद	1. कांजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती होगी? 2. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

			प्रश्न अभ्यास- 1,2,3	

12	17.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	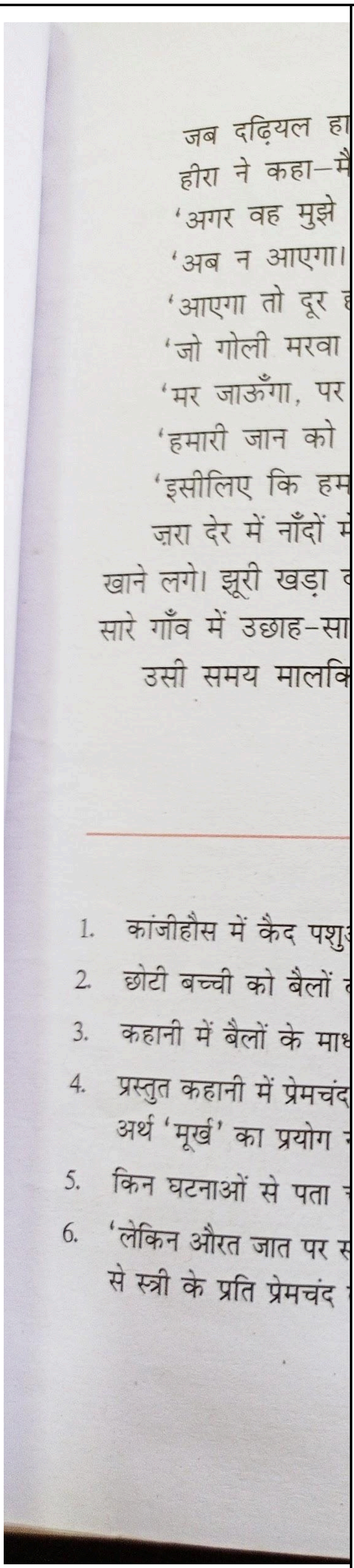 जब दढ़ियल हा हीरा ने कहा—मै 'अगर वह मुझे 'अब न आएगा। 'आएगा तो दूर 'जो गोली मरवा 'मर जाऊँगा, पर 'हमारी जान को 'इसीलिए कि हम ज़रा देर में नाँदों में खाने लगे। झूरी खड़ा सारे गाँव में उछाह-सा उसी समय मालकि 1. कांजीहौस में कैद पशु 2. छोटी बच्ची को बैलों 3. कहानी में बैलों के माध 4. प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग 5. किन घटनाओं से पता 6. 'लेकिन औरत जात पर स से स्त्री के प्रति प्रेमचंद	1.कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौन से नीति-विषयक मूल्य उभर कर आए हैं? 2.कहानी में प्रेमचंद ने गधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मूर्ख ' प्रयोग न कर किस नए अर्थ की ओर संकेत किया है?

			प्रश्न अभ्यास- 4,5,6	
13	19.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	पाठ से संबंधित वीडियो दिखाया गया।	1. किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी? 2. पाठ में से पाँच मुहावरे छाँटकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

14	21.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	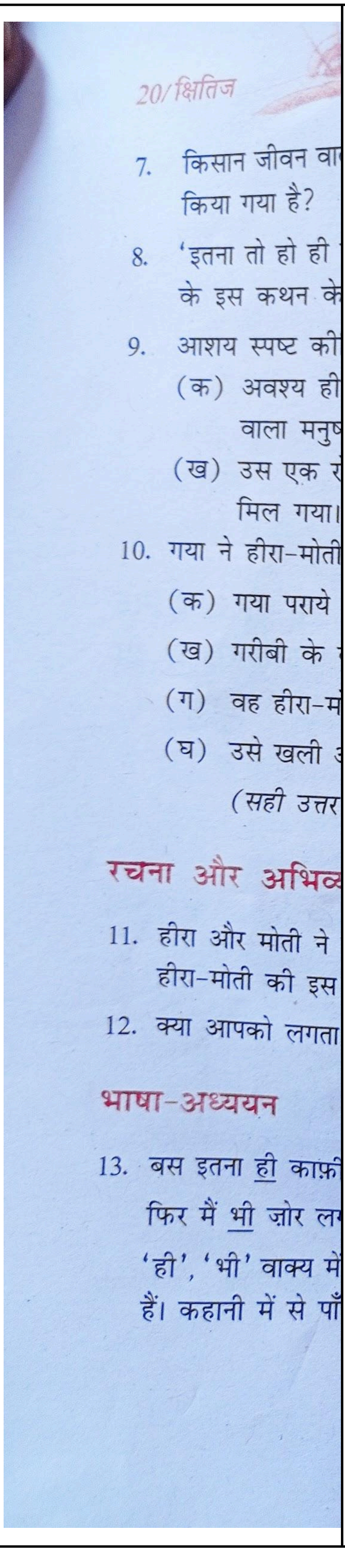 20/क्षितिज 7. किसान जीवन वा किया गया है? 8. 'इतना तो हो ही के इस कथन के 9. आशय स्पष्ट की (क) अवश्य ही वाला मनुष (ख) उस एक मिल गया। 10. गया ने हीरा-मोती (क) गया पराये (ख) गरीबी के (ग) वह हीरा-मो (घ) उसे खली (सही उत्तर रचना और अभिव 11. हीरा और मोती ने हीरा-मोती की इस 12. क्या आपको लगता भाषा-अध्ययन 13. बस इतना ही काफ़ी फिर मैं भी ज़ोर ल 'ही', 'भी' वाक्य मे हैं। कहानी में से पाँ	1.लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।'-हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए। 2.किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी संबंधों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है?

15	22.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	Dance, Music, Art & craft	1.लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।'-हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए। 2.किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी संबंधों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है?

16	23.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	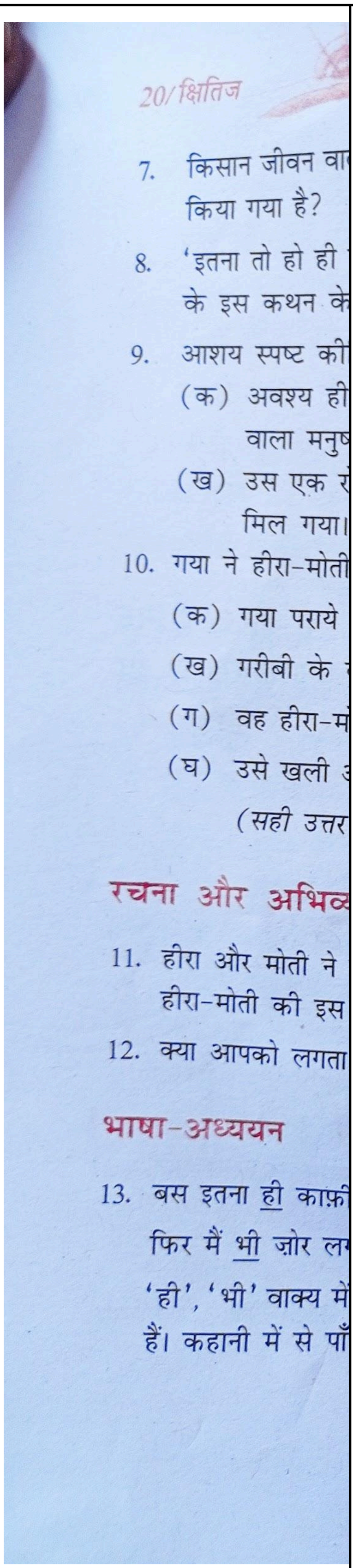 20/क्षितिज 7. किसान जीवन वा किया गया है? 8. 'इतना तो हो ही के इस कथन के 9. आशय स्पष्ट की (क) अवश्य ही वाला मनुष (ख) उस एक मिल गया। 10. गया ने हीरा-मोती (क) गया पराये (ख) गरीबी के (ग) वह हीरा-म (घ) उसे खली (सही उत्तर रचना और अभिव 11. हीरा और मोती ने हीरा-मोती की इस 12. क्या आपको लगता भाषा-अध्ययन 13. बस इतना ही काफ़ी फिर मैं भी ज़ोर ल 'ही', 'भी' वाक्य मे हैं। कहानी में से पाँ	1.इतना तो हो ही गया कि नौ दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे'-मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए। 2.आशय स्पष्ट कीजिए (क) अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

17	24.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	कहानी लेखन प्रतियोगिता	1.हीरा और मोती ने शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई लेकिन उसके लिए प्रताड़ना भी सही। हीरा-मोती की इस प्रतिक्रिया पर तर्क सहित अपने विचार प्रकट करें। 2.क्या आपको लगता है कि यह कहानी आजादी की लड़ाई की ओर भी संकेत करती है?